मिथिला सांस्कृतिक परिषद व साहित्य अकादमी की संयुक्त संगोष्ठी

मिथिला को जानना है तो लोकगाथाओं का अनुशीलन करें: मित्रेश्वर अग्निमित्र

सिटी रिपोर्टर | जमशेदपुर

मिथिला सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुर और साहित्य अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में मैथिली साहित्य के विकास में लोकगाथा और लोकगीत के महत्व पर चल रही दो-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विद्यापति परिसर गोलमुरी संपन्न हो गया। आज अंतिम दिन डॉ मित्रेश्वर अग्निमित्र ने कहा कि हमारे समाज में लोक गाथा और गायन को देखना वर्जित था। उस कड़ी को तोड़ मैंने अपने गांव के निम्नवर्गीय लोगों के बीच जाकर गाथा गायन और नृत्य को देखा और सुना है। जब कोई लिखित साहित्य नहीं था तब मिथिला के रहन सहन सांस्कृतिक परंपरा लोकगाथा के माध्यम से हमें पता चलता है। उन्होंने कहा कि मिथिला को जानना है तो मैथिली गाथाओं का अनुशीलन करें। कार्यक्रम में महासचिव मिथिला सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुर सुजीत कुमार झा, अध्यक्ष मिथिला सांस्कृतिक परिषद जमशेदपुर शिशिर कुमार झा,जल संसाधन विभाग के मुख्य अभियंता अशोक कुमार लाल दास, साहित्यकार डा शिव प्रसाद यादव चेतना झा , अमित कुमार ठाकुर,महेंद्र नारायण राम , डॉ रवींद्र कुमार चौधरी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान डॉ एन सुरेश बाबू ने कहा कि मिथिला भाषा में जितनी किताबें साहित्य अकादमी के द्वारा छापा गया है उस हिसाब से मैथिली भाषा भाषियों के द्वारा किताबें खरीदी नहीं जाती है। इस मिथिला सांस्कृतिक परिषद ने पच्चीस हजार रुपए की किताबें लाइब्रेरी के लिए खरीदने की घोषणा की है।समापन सत्र के दौरान पर्यवेक्षीय प्रतिवेदन साहित्य अकादमी भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के मैथिली परामर्श मंडल संयोजक डॉ अशोक कुमार झा अविचल ने प्रस्तुत किया।